UGC APPROVED JOURNAL - 47746
© INNOVATIVE RESEARCH THOUGHTS | Refereed | Peer Reviewed | Indexed
ISSN : 2454 – 308X | Volume : 03 , Issue : 10 | October – December 2017

भारतीय राजनीति में धर्म की भूमिका: एक विवेचना

Sachin,
Research scholar department of History, MDU Rohtak

सार

भारत के औपनिवेशिक शासन से आज़ाद होने के 70 वर्षों से अधिक समय के बाद, भारतीयों को आम तौर पर लगता है कि उनके देश ने स्वतंत्रता के बाद के अपने आदर्शों में से एक का पूरा पालन किया है: एक ऐसा समाज जहां कई धर्मों के अनुयायी स्वतंत्र रूप से रहते हुए अपने धर्मों का पालन कर सकते हैं। भारत की विशाल जनसंख्या विविध होने के साथ-साथ धर्मनिष्ठ भी है। न केवल दुनिया के अधिकांश हिंदू, जैन और सिक्ख भारत में रहते हैं, बल्कि यह दुनिया की सबसे बड़ी मुस्लिम आबादी में से एक और लाखों ईसाइयों और बौद्धों का घर भी है। भारतीय धार्मिक सहिष्णुता को राष्ट्रीय स्तर पर अपने अस्तित्व के केन्द्रीय तत्व के रूप में देखते हैं। मुख्य धार्मिक समूहों में अधिकांश लोग कहते हैं कि "सच्चा भारतीय" होने के लिए सभी धर्मों का सम्मान करना बहुत जरूरी है। और सहिष्णुता धार्मिक होने के साथ नागरिक मूल्य है।

मुख्य बिंदु: धार्मिक सहिष्णुता, समुदाय, मान्यताएं, जनसंख्या, आत्मकल्याण इत्यादि ।

प्रस्तावना

भारतीय इस दृष्टिकोण पर एक हैं कि *अन्य* धर्मों का सम्मान करना *उनके अपने* धार्मिक समुदाय का सदस्य होने का एक बहुत महत्वपूर्ण हिस्सा है। इन साझा मूल्यों के साथ कई मान्यताएं जुड़ी हैं जो धार्मिक सीमाओं से परे हैं। भारत में न केवल अधिकांश हिंदू (77%) कर्म में विश्वास करते हैं, बल्कि उतने ही प्रतिशत मुसलमान भी कर्म में विश्वास करते हैं। 81% हिंदुओं के साथ भारत में एक तिहाई ईसाई (32%) कहते हैं कि वे गंगा नदी की पवित्रता की शक्ति में विश्वास करते हैं, जो कि हिंदू धर्म का प्रमुख विश्वास है। उत्तरी भारत में, 37% मुसलमानों के साथ, 12% हिन्दू और 10% सिक्ख, सूफीवाद से जुड़ाव को स्वीकार करते हैं जो कि एक ऐसी आध्यात्मिक परंपरा है जो इस्लाम के सबसे करीब से जुड़ी हुई है। और सभी प्रमुख धार्मिक पृष्ठभूमि के भारतीयों का विशाल बहुमत कहता है कि बुजुर्गों का सम्मान करना उनके धार्मिक विश्वास के लिए बहुत महत्वपूर्ण है।

फिर भी, कुछ मूल्यों और धार्मिक मान्यताओं को साझा करने के बावजूद – साथ ही एक ही संविधान के तहत एक ही देश में रहते हुए – भारत के प्रमुख धार्मिक समुदायों के सदस्यों को अक्सर यह महसूस नहीं होता है कि उनके बीच बहुत कुछ साझा है। बहुसंख्यक हिंदू (66%) ख़ुद

को मुसलमानों से बहुत अलग देखते हैं, और अधिकांश मुसलमान यही भावना साझा करते हैं कि वे हिंदुओं (64%) से बहुत अलग हैं। कुछ अपवाद हैं: दो तिहाई जैन और लगभग आधे सिक्ख कहते हैं कि उनमें और हिंदुओं के बीच बहुत कुछ साझा है। लेकिन आम तौर पर, भारत के प्रमुख धार्मिक समुदायों में लोग ख़ुद को दूसरों से बहुत अलग देखते हैं।

अंतर की यह धारणा उन परंपराओं और आदतों में परिलक्षित होती है जो भारत के धार्मिक समूहों के अलगाव को बनाए रखती हैं। धार्मिक समूहों की श्रंखला में कई भारतीयों का कहना है कि अपने समुदाय के लोगों को दूसरे धर्म में शादी करने से रोकना अति आवश्यक है। मोटे तौर पर दो-तिहाई हिंदू भारत में हिंदू महिलाओं (67%) या हिंदू पुरुषों (65%) के अंतरजातीय विवाह को रोकना चाहते हैं। ज़्यादातर मुस्लिमों को भी ऐसा ही लगता है: 80% का कहना है कि मुस्लिम महिलाओं को अपने धर्म से बाहर शादी करने से रोकना बहुत जरूरी है और 76% का कहना है कि मुस्लिम पुरुषों को ऐसा करने से रोकना बहुत ज़रुरी है।

हिंदू धर्म की मान्यताओं के अनुसार हिंदू धर्म को विश्व का सबसे प्रचीन धर्म माना गया है। हिंदू धर्म के अनुसार धर्म की परिभाषा के बारे में कहा गया है कि "धर्म" संस्कृत भाषा का शब्द है। यह "धृ" धातु से बना है जिसका अर्थ होता है " धारण करने वाला " इस तरह हम कह सकते हैं कि "धार्यते इति धर्म:" अर्थात, जो धारण किया जाये वह धर्म है।

हिन्दू धर्म के अनुसार लोक परलोक के सुखों की सिद्धि हेतु सार्वजानिक पवित्र गुणों और कर्मों का धारण व सेवन करना ही धर्म है।

वास्तव में धर्म आत्मोन्नति, आत्मकल्याण का एक पवित्र मार्ग है। जो इस मार्ग पर चलना चाहें उन्हें धर्म के सही स्वरूप को खोजना चाहिए। अन्यथा व्यर्थ पाखण्डों को ढोते-ढोते व्यक्ति व समाज अवसाद की स्थिति में डूबता जा रहा है। धर्म आत्मा के उद्धार का, आत्मा के उत्थान की एक सुव्यवस्थित पद्धति है जिसका अनुसरण कर हम एक सुंदर समाज का निर्माण कर सकते हैं।

- धार्मिक आधार पर राजनीतिक दलों का निर्माण

भारत में धर्म के आधार पर राजनीतिक दलों के निर्माण का पुराना इतिहास रहा है। धार्मिक आधार पर दल के निर्माण की लम्बी सूची है । रामराज्य परिषद, हिन्दू महासभा, शिवसेना, भारतीय जनता पार्टी, मुस्लिम लीग, एआईएमआईएम तथा शिरोमणि अकाली दल समेत कई दलों के निर्माण में धर्म की प्रभावशाली भूमिका रही है । ये दल राजनीति में धर्म को प्रधानता देने का कार्य किया करते हैं । ये दल धर्म, सम्प्रदाय के आधार पर अपने उम्मीदवार खडे करते हैं, प्रचार करते हैं तथा

वोट मांगते हैं। चुनावों में मन्दिर - मस्जिद, गौवध तथा पुस्लिम पर्सनल लॉ जैसे पमुद्दों को उद्रालकर जनभावनाओं को उकसाने का कार्य करते हैं ।

- धर्म का निर्वाचन पर प्रभाव

भारतीय राजनीति के मतदान व्यवहार पर सरसरी निगाह डालने पर स्पष्ट होता है कि यहाँ निर्वाचन के दौरान पतदाताओं के द्वारा व्यापक पैमाने पर धार्मिक आधार पर पतदान किया जाता है| धार्मिक साध - सन्ृतों, इमामों तथा पादरियों द्वारा धार्मिक आधार पर पतदान की अपील की जाती है। धार्मिक आधार पर होने वाले मतदान का ही परिणाम है कि 2002 में गुजरात में हुए की - मुस्लिम दंगे के पश्चात वहाँ लगातार भारतीय जनता पार्टी सत्ता हासिल करने में सफल हो रही है। धार्मिक आधार पर वोटों के ध्वृवीकरण के कारण ही 2014 तथा 21 09 में भारतीय जनता पार्टी ने केन्द्र की सत्ता पर काबिज होने में भी सफलता पाई है | धार्मिक आधार पर वोटों के गोलबन्दी के कारण ही बिहार के म्रस्लिम बहल जिले से अपने विधायक जिताने में एआईएमआईएम जैसी पार्टी ने सफलता पाई है | लम्बे समय से मारतीय राजनीति में साध - सन्ृतों, मौतवियों तथा पादरियों द्वारा धार्मिक आधार पर प्रतदान की अपील की जाती रही है । मार्च 1977 तथा जनवरी 1980 के चुनावों के दौरान दिल्ली की जामा मस्जिद के शाही इमाम ने चुनावी सभाओं में भाषण देते हए मुस्लिम समुदाय के प्रतदाताओं को किसी खास दल के पक्ष में पतदान करने को प्रेरित किया । उस वक्त एक सप्वाद ने दिनमान, 16 - 22 दिसम्बर, 1979 में लिखा था कि, " सवाल उठता है कि समाजवाद और गणतंत्र की बात करने वाले अगर ड्माम के नाम से वोट पाना चाहेंगे तो हो सकता है कि बतराज मघोक जैसे लोग शंकराचार्य के नाम पर वोट माँगने लगे । फिर क्या इस देश को शंकराचार्य और इमाम के बीच चुनाव करना पड़ेगा ।"

- दबाव समूह के रूप में धर्म

अपने सांगठनिक क्षमता तथा व्यापक जनसमर्थन के बल पर धार्मिक संगठनों द्वारा भारतीय राजनीति में प्रभावशाली दबाव समूह की भूमिका निभाने का कार्य किया जाता रहा है ।विभिन्न धार्मिक संगठनों द्वारा सरकार के समक्ष दबाव बनाकर अपने धार्मिक हित में फैसले करवाए जाते रहे हैं। हिन्दू महासभा, विद्या हिन्दू परिषद, बजरंग दल, अखाड़ा परिषद तथा जमीयत-उल- उलेमा, अमारते शरिया एवं जमायते इस्लामी जैसे धार्मिक संगठनों द्वारा दबाव समूह के रूप पें कार्य कर कई बार अपने धार्मिक हित में सरकार से फैसले करवाए गए हैं ।

- धर्म के आधार पर पृथक राष्ट्र तथा राज्य की मांग

© INNOVATIVE RESEARCH THOUGHTS | Refereed | Peer Reviewed | Indexed
ISSN : 2454 – 308X | Volume : 03 , Issue : 10 | October – December 2017

देश के अन्दर समय - समय पर धार्मिक आधार पर पृथक राष्ट्र तथा राज्य के निर्माण की मांग भी उठाई जाती रही है । 80 के दशक में राजनीतिक प्रभुत्व की मंशा को लेकर पंजाब के धार्मिक (सिक्ख) नेता गिंडरावाला द्वारा पृथक खालिस्तान राष्ट्र की मांग को लेकर पंजाब में आन्दोलन प्रारम्भ किया गया जो बाद में हिंसक रूप धारन कर लिया, जिसे दबाने के लिए तथा राष्ट्रीय एकता तथा अखंडता की रक्षा के लिए बाद में भारत सरकार को सैन्य कार्रवाई का सहारा लेना पड़ा । उसी प्रकार स्वाधीनता प्राप्ति के पश्चात जम्मू - कश्मीर के राजा हरि सिंह द्वारा अपने राज्य के भारत में विलय के पश्चात वहां के मुस्लिम नेताओं द्वारा कश्मीर को अलग राष्ट्र घोषित करने का मांग किया जाने लगा । 1980 - 90 के दशक में इस मांग ने जम्मू - कश्मीर में भी हिंसक रूप धारण कर लिया | जिसके कारण 1990 से 1996 तक वहाँ राष्ट्रपति शासन लागू किया गया । उसके बाद भी अलगाववादियों द्वारा समय - 2 पर हिंसक घटनाओं को अंजाम दिया जाता रहा, जिससे निबटने के लिए वहां भी सैनिकों का सहारा लिया गया । जम्मू - कश्मीर की अलगाववादी तथा आतंकवादी समस्या के स्थाई समाधान के लिए भारत सरकार द्वारा 058 अगस्त 2019 को जम्मू - कश्मीर के स्वतन्त्र राज्य का दर्जा समाप्त करते हुए उसे तीन केन्द्र शासित प्रदेशों (1) जम्मू [21] कश्मीर तथा [31 लद्दाख के रूप में विभाजित कर दिया तथा वहाँ से धारा : 370 को समाप्त कर दिया । इसके अलावा धर्म के आधार पर नागालैण्ड के ईसाइयों द्वारा भी पृथक प्रान्त की मांग की गई थी ।

- मंत्रिमण्डल निर्माण में धार्मिक प्रतिनिधित्व

भारतीय राजनीति में धर्म के प्रभाव को इसी बात से समझा जा सकता है कि जब भी केन्द्र अथवा राज्य में मंत्रिमण्डल का गठन होता है उसमें सभी धर्मों को प्रतिनिधित्व दिया जाता है । वह अलग बात है कि अलग - अलग राजनीतिक दरलों द्वारा विभिन्न धर्मों को कम अथवा अधिक प्रतिनिधित्व दिया जाता है| परन्तु, किसी भी दल द्वारा किसी भी धर्म को सिरे से खारिज नहीं किया जाता ।

- धर्म का राष्ट्रीय एकता पर प्रभाव

हमारे संविधान निर्माताओं द्वारा काफी सोच समझ कर राष्ट्रीय एकता, अखण्डता तथा भाईचारा को ध्यान में किया भारतवर्ष को धर्मनिरपेक्ष राष्ट्र घोषित किया गया था । उसके पीछे उनलोगों की मंशा थी कि यहाँ सभी धर्म के लोग आपस में मिल जुलकर आपसी भाईचारे के साथ रहेंगे तथा सामूहिक रूप से राष्ट्र के विकास में अपना योगदान देंगे | परन्तु, स्वाधीनता प्राप्ति के पश्चात भारत

विभाजन के वक्त तथा उसके पश्चात हुए कई धार्मिक दंगों ने आपसी प्रेम, सौहार्द तथा भाईचारा को प्रभावित किया । ऐसे दंगों से राष्ट्रीय एकता तथा अखण्डता पर भी खतरा बना रहता है ।

- राज्यों की राजनीति पर धर्म का प्रभाव

विभिन्न प्रान्तों में बेटा हमारे देश में अनेक जाति, धर्म, सम्प्रदाय के लोग निवास करते हैं । हर प्रान्तों की अलग - अलग समस्याएं होती है, जिससे की वहाँ की राजनीति प्रभावित होती है । प्रान्तों की राजनीति को प्रभावित करने वाले कई कारक हैं । उन्हीं कारणों में से एक प्रमुख कारक धर्म भी है | पंजाब, कश्मीर तथा केरल ऐसे राज्य हैं जहों की राजनीति पर धर्म का प्रमाव स्पष्ट रूप में देखा जा सकता है|

निष्कर्ष

इस प्रकार यह स्पष्ट है कि मारतीय राजनीति पर धर्म का गहरा प्रभाव रहा है तथा आज "भी यहाँ की राजनीति को प्रभावित करने वाले कारकों में धर्म एक महत्वपूर्ण कारक है । इसके लिए सरकारी उदासीनता तथा वोट की राजनीति सबसे अधिक जिम्मेवार है ।सन 2020 में पाननीय सर्वोच्च न्यायालय ट्वारा अयोध्या में राम मन्दिर निर्माण सम्बन्धी फैसला सुनाए जाने के पश्चात तम्बे समय से चले आ रहे एक धार्मिक विवाद का समापन हो गया । देश शान्ति व्यवस्था कायम रखने तथा राष्ट्रीय उन्नति के लिए धार्मिक विवाद तथा उन्माद का खात्मा आवश्यक है । इसके लिए साम्प्रदायिक दलों के खात्मे के साथ - 2 राष्ट्रीय एकता, अखण्डता एवं भाईचारा को बढ़ावा देने वाले नैतिक शिक्षा के प्रचार प्रसार पर बल दिए जाने की आवश्यकता है |

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. https://www.pewforum.org/2021/06/29/religion-in-india-tolerance-and-segregation
2. https://www.pewforum.org/wp-content/uploads/sites/7/2https://www.pewforum.org/2021/06/29/hindi
3. summary/021/06/PF_06.29.21_India_overview_Hindi.pdf
4. https://www.amarujala.com/kavya/mere-alfaz/ashok-singh-dharm-kya-hai